P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मार्कण्डेय के उपन्यासों में ग्रामीण स्त्री का यथार्थ

सुमन कुमारी बरनवाल
शाधार्थी,
हिन्दी विभाग
विश्व भारती शान्ति निकेतन
आसनसोल , पश्चिम बंगाल

सारांश

मार्कण्डेय सातवे–आठवें दशक के साहित्यकार है। उनके पास भारत का बुनियादी जनजीवन अर्थात् ग्रामीण जीवन का व्यापक अनुभव संसार है। जिसे वह अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी से प्राप्त करती है।यही कारण है कि उनके रचना–संसार में ग्रामीण जीवन का यथार्थ पूरी संश्लिष्टता में व्यक्त होता दिखाई पड़ रहा है।उनके दोनों चर्चित उपन्यास 'सेमल के फूल' और 'अग्निबीज' स्वतंत्र भारत के पिछड़ेपन की कथा कहते हैं। विषय–वस्तु के स्तर पर इन दोनों उपन्यासों के मार्फत से मार्कण्डेय ने न सिर्फ ग्रामीण जीवन की सत्यता को उभारा है बल्कि नगरीय समाज को चिंतन करने के लिए बाध्य करता है कि आज का भूमंडलीकृत ग्रामीण समाज अपने आप में पिछड़ता जा रहा है। अमूमन दोनों ही उपन्यास पाठक और समाज को एक नई दिशा प्रदान करते हैं।

मुख्य शब्द : शिक्षा, विवाह, प्रेम, आधुनिकता, स्त्री–उत्पीड़न ।

प्रस्तावना

मार्कण्डेय ने अपने उपन्यासों में स्त्री के संत्रस्त जीवन का सफल और सजीव अंकन किया है य जहां स्त्री प्रतिक्षण संघर्षरत होकर अपने अस्तित्व को स्थापित करने की पूरी कोशिश करती है। आधुनिक समाज में स्त्री अपने वास्तविक अधिकारों से वंचित है, जिसकी वजह भारतीय पुरुष व्यवस्था है।ऐसी मान्यता है की समाज में स्त्री–पुरुष दोनों ही जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं, जिनमें यदि एक पहिया खराब हो जाए तो जीवन संत्रस्त–सा हो जाता है। संवैधानिक और सामाजिक दृष्टि से स्त्री–पुरुष दोनों की स्थिति महत्वपूर्ण है। 'अग्निबीज' उपन्यास में बाकर का वक्तव्य है– " तुम्हार मतलब है कि लड़कियां चाकरी करती फिरें ! बिना नौकरी की उनकी जिंदगी दूभर हो रही है। बड़े–बड़े की इज्जत धूल में मिली जा रही है। गुंडे–बदमाश उनकी जान ले रहे हैं। नौकरी करेंगी, तो भला उनकी क्या इज्जत होगी। देखते नहीं, ब्लॉक की दाई और नर्स को गांव के लोग कैसी निगाह से देखते हैं ।"[1] यहां उक्त समस्या को गंभीरता के साथ उठाया गया है, साथ ही ग्रामीण और शोषित स्त्री समाज के साथ न्याय करने का भरसक प्रयास किया गया है। ग्रामीण परिवेश में अशिक्षित स्त्रियाँ ही नहीं, बल्कि शिक्षित और नौकरी करने वाली स्त्रियों की भी स्थिति बहुत अधिक अच्छी नहीं है। 'अग्निबीज' में बाकर द्वारा कहे गए वक्तव्य से कि ग्रामीण लोग नौकरी करने वाली दाई और नर्स को लोग किस निगाह से देखते हैं य पुरुष समाज की कटु सच्चाई का पर्दाफाश करता है और साथ ही स्त्री की स्थिति आज भी इतनी दीन–हीन है कि उसे संदेह के साए में देखा जाता है।यदि वह सफल होती है तो पुरुष समाज उसकी सफलता का श्रेय उसे ना देकर उसके चरित्र में दोषारोपण करके देता है।आज ग्रामीण समाज इतना उन्नत होने के बावजूद भी ग्रामीण स्त्री की सफलता को उसके देह से जोड़ता है जो उसकी अस्मिता के लिए घातक है।

अध्ययन का उद्देश्य

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों की यथार्थवादी परंपरा के सशक्त ,समर्थ और प्रतिबद्ध कथाकार मार्कण्डेय है।प्रेमचंद, नागार्जुन,रेणु के बाद मार्कण्डेय के उपन्यासों में भारतीय गाँवों का यथार्थ तथा वहाँ विराजमान पूंजीवाद, सामंतवाद, जमींदारी–व्यवस्था,शोषण,शोषित किसान,दलित,स्त्री का मर्मस्पर्शी चित्रण मिलता है।सामाजिक ,राजनीतिक, आर्थिक स्तर पर वर्तमान ग्रामीण स्त्रियों का शारीरिक व मानसिक शोषण तथा उनमें व्याप्त अशिक्षा के कारणों की तफतीस और अन्य प्रमुख कारणों से उपजे उनके भीतरी हतोत्साह को मुख्य विचारधारा में शामिल करना इस आलेख का प्रमुख उद्देश्य है ।

साहित्यावलोकन

बदलते युग–संदर्भो को केंद्र में रखकर मार्कण्डेय के ऊपर कई पुस्तकों को आज पढ़ा जा रहा है।जिसमें वह अपनी समाजवादी व प्रगतिवादी पहल

जाहिर करते है। (2012) डॉ. जिभाऊ शामराव मोरे ने 'मार्कण्डेय का कथा साहित्य और ग्रामीण सरोकार' पुस्तक में लिखा है – "मार्कण्डेय नारी–शोषण की समस्या को एक प्रमुख समस्या के रूप में स्वीकार करते हुए बदलते युग के अनुरूप किन्तु मार्क्सवादी ढंग से उसका समाधान खोजने का ईमानदार प्रयास करते है ।" पृष्ठ –179

ग्रामीण परिवेश में स्त्री समाज की कारूणिक की स्थिति से मार्कण्डेय पूरी तरह वाकिफ है।तभी तो उनके उपन्यासों में स्त्री– शोषण अपनी सार्थकता के साथ उभर कर आता है। 'अग्निबीज' में गोपी काकी कहती है – "मेहरारू हीन जात है। वह पति की दासी है। इसी में उसका निस्तार है, मुक्ति है। घर के बाहर उसके लिए कांटे बिछे हैं। मां–बाप उसका दान देकर सिर का भार टालते हैं।"[2] मार्कण्डेय ने यहाँ ग्रामीण समाज की उस जड़ता को दिखाया है जो निरंतर रूढ़ बनती जा रही है।यह सच है कि ग्रामीण समाज की पुरानी स्त्रियाँ अपने दकियानूसी मानसिकता से ऊबर नहीं पायी हैं।नतीजतन नयी स्त्रियाँ या लडकियाँ अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व का निर्माण नही कर पा रही हैं।जो आज के भूमंडलीकृत ग्रामीण विकास के लिए अत्यंत चिंतनीय है।ग्रामीण समाज यह सोचने की कोशिश क्यों नहीं करता कि स्त्री दासी या सिर्फ दान की वस्तु नहीं है।उसमें अदम्य जिजीविषा और परिस्थितियों से संघर्ष करने का जज्बा व प्रतिरोध करने की क्षमता भी है। जरुरत है बस एक अनुकूल वातावरण की और तभी ग्रामीण स्त्रियों में सुधार आ सकता है। अन्यथा सब कुछ वैसा ही रहेगा जैसा की स्वतंत्रता के पहले था। ग्रामीण परिवेश में पली–बढ़ी लड़कियां पढ़ाई करने के बजाय ससुराल मंन रहती हैं। ग्रामीण समाज में खासकर छोटी जाति की लड़कियों की स्थिति सोचनीय है और उन्हें कभी भी सम्मान पूर्वक दृष्टि से देखा नहीं जाता। पारस कहता है – "खान–पान का और का मतलब हुआ, भाई ! तुम्हें एक चमाइन दिला देंगे ! भाई जी ! लेकिन हमारे गांव में तो आधे बाभन बिन बियाहे हैं। किसको–किसको चमाईन देंगे भाई जी?"[3] यह वर्तमान गाँवों का सच है कि ब्राह्मणों की नजर हर समय छोटी जाती की लड़कियों और स्त्रियों पर टिकी रहती है। इसके लिए वह कई तरह के पैंतरेबाजी, श्रेष्ठता, जमींदारी व्यवस्था के मार्फत से उनका शारीरिक शोषण व बलात्कार करते हैं।समाज उनपर उंगली ही उठा सकता है कारण वही वहाँ के दबंग , जमींदार, जोतदार ,सरपंच हैं। इनके खिलाफ जाना अर्थात् गाँव से निष्कासित होना है। फलतः इस भय से स्त्रियों का शोषण होना स्वाभाविक है। गाँवों को व्यवहार और विचार दोनों स्तर पर आज इस मानसिकता से उबरना होगा, तभी वहाँ की स्त्रियों का विकास संभव है।

गांव की हरिजन स्त्री हिरनी के यौन–शोषण और उसकी हत्या तथा छबिया का गायब हो जाना जैसी घटनाएं श्यामा को भी झिंझोड़ कर रख देती हैं तथा वह हरिजन बालिका विद्यालय के उद्घाटन समारोह में गांव वालों के समक्ष कहती है – "हम सीता–सावित्री को लेकर क्या करेंगे ? राम–कृष्ण अथवा अर्जुन–भीम का समाज तो अब रहा नहीं ,यह घुरहू–कतवारू का समाज है। दो–जून की रोटी और नमक जुटाने के लिए अस्सी सैकड़ा लोग अपने आदमी होने की बात ही भूल चुके हैं।उनके पास सोचने का भी समय नहीं है ।"[4] ग्रामीण परिवेश में स्त्री की दयनीय और भयावहता से पूर्ण स्थितियां श्यामा को शोषित स्त्रियों की मुक्ति के लिए संघर्ष करने को प्रेरित करती हैं, तभी तो वह कहती है –"हम भागे नहीं इस भयावहता को हिम्मत करके कम से कम देखें ,और समझें।"[5] श्यामा गांव की शोषित स्त्रियों के उद्धार के लिए अपने सहपाठियों के साथ शोषण के खिलाफ आवाज उठाती है, परंतु श्यामा रूपी अग्निबीज को राजनेता ज्वालासिंह से उसका विवाह तय कर अंकुरित होने के पहले ही खत्म कर दिया जाता है। जल्दबाजी में लिए गए श्यामा के विवाह के निर्णय का कोई विरोध नहीं होता और श्यामा भी चुपचाप इसे स्वीकार करती है – "जो श्यामा पूरे उपन्यास में नियति के चक्र को आद्योपांत समझते हुए उसमें खुद को बहा देने के लिए तैयार दिखाई देती है और अपनी विकसित बौद्धिकता के बावजूद भारतीय नारी की एक करुण गाथा कहती प्रतीत होती है, मानो सारी सामाजिक वर्जनाओं, नियम–बंधनों को सहज स्वीकार लेना उसके लिए श्रेयस्कर हो ।"[6]

श्यामा सामंतवादी वर्ग से होते हुए भी स्त्री उद्धार करने का अपूर्व कार्य करती है, किंतु अंत में पराजित होती है। पुरुष समाज स्त्री की बढ़ती आत्मशक्ति को कतई बर्दाश्त नहीं कर पाता और इतनी आसानी से जालसाजी कर उसे पराजित करता है कि स्त्री स्वयं विरोध नहीं कर पाती। पुरुष स्त्री–समाज को विवाह के बंधन में बांध कर उसे मूक गाय–सा जीवन प्रदान करता है जिसे ना चाहते हुए भी स्त्री स्वीकार करती है और यहीं उसकी अस्मिता रौंदी जाती है। अग्निबीज की एक अन्य स्त्री चंदा बहू की स्थिति भी कारूणिक है जो जमींदार और राजनेता की पत्नी होते हुए भी विडंबनापूर्ण जीवन जीने को विवश है। स्वार्थान्धता और प्रजा विरोधी राजनेता पति तथा नवीन विचारों से युक्त बेटे सुमित के बीच चंदा बहू की स्थिति दुविधा पूर्ण संयुक्त है जिसके कारण वह सदैव दुखी रहती है। उसके मन में पत्नी और मां का अंतर्द्वंद चलता रहता है और वह किसी समस्या का समाधान पूर्णतया नहीं खोज पाती। इसी वजह से सदैव विलाप करती है। पुरुष समाज के प्रतिनिधि पिता ,पति और पुत्र स्त्री पर सदैव अपने निर्णय थोप कर उसे तुच्छ बनाते हैं। यह रिश्ते उसके अस्तित्वबोध को धूमिल करते हैं। वह रिश्तो में उलझ कर अपने अस्तित्व को भूल जाती हैं, जहां स्त्री अस्मिता खतरे में नजर आती है।

'सेमल के फूल' उपन्यास असफल प्रेम की गाथा होते हुए भी स्त्री जीवन की मर्मांतक अभिव्यक्ति है। प्रेम की प्रगाढ़ता के बावजूद भी प्रतिकूल परिस्थितयों की वजह से नीलिमा और सुमंगल मिल नही पाते हैं। जीवनपथ में संघर्षपूर्ण जीवन जीना उनकी नियति बन जाती है। बड़े जमींदार घराने से ताल्लुक रखने वाला सुमंगल अपनी संपत्ति की त्यागकर लोक–सेवा में लिप्त रहने की अदम्य जिजीविषा से परिपूर्ण है। नीलिमा धनाढ्य सामंती परिवार की मातृ–पितृ विहीन स्त्री है। नियति की मार ने पितृसत्तात्मक समाज में 'अपशकुन' और 'अभागी' की पदवी से विभूषित किया तथा वह भी रुढ़िग्रस्त मानसिकता की शिकार हो इसे ही आत्मसात कर लेती है–"मैं जब

जन्मी तो पिता गए और अब, जब कन्या परायी धरोहर होकर घर वालो के गले की फास बन जाती है तो माँ भी चुपके से खिसक गई। कैसी अपशकुन की धरोहर थी– कितनी –अभागी !"[7] इसमें नीलिमा और सुमंगल के असफल प्रेम और पीड़ा को प्रस्तुत कर स्त्री मन को निरीह पंछी की भांति अंकन किया गया है जो सेमल के लाल टेसू रंग को देखकर फल की आशा में उसे सेता रहता है और अंत में उसके रुई से छितराए रेशों को पाकर निराशा के गहन अंधकार में डूब जाता है।सुमंगल से सच्चा प्रेम करके भी उसे खो देने वाली नीलिमा पहले निराशा हताशा और त्रासदी के अनंत सागर में डूबती है और अंत में सफल काल कलवित हो जाती है।

नीलिमा पुरुष समाज में शोषित और उपेक्षित स्त्री है।नीलिमा और सुमंगल का विवाह नहीं हो पाता और दोनों दुखमय जीवन जीते हैं। प्रेम की पीड़ा इतनी भयावह होती है कि नीलिमा विवाहित होकर भी सुमंगल की यादों को भूल नहीं पाती और अंत में मृत्यु का ग्रास बन जाती है। 'सेमल के फूल' को पढ़कर प्रगतिशील कवि केदारनाथ अग्रवाल ने मार्कण्डेय को लिखे पत्र में कहा था – "कांटो में खिलते गुलाब की पंखुड़ियों पर, चातक अपना दिल निकाल कर रख दे जैसे और वही दिल फिर सुगंध बन–बन कर महके और वही दिल फिर बुलबुल सा बन में गाए, रस तो बरसे लेकिन कोई चौन ना पाए, वैसी ही मर्म–व्यथा से भरी कथा हैय इसको पढ़कर याद मुझे भवभूति याद आ गए और नयन में करुणा के घन सघन छा गए।"[8]

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मार्कण्डेय ग्रामीण परिवेश के कुशल चितेरे हैं।वह स्त्री समाज के सच्चे हितैषी और स्त्रियों के वास्तविक अधिकारों को प्रदान करने वाले समर्थ रचनाकार है। मार्कण्डेय ने अपनी रचनाओं में भारतीय ग्रामीण जीवन में स्त्री की निर्धनता, पीड़ा और संत्रास को मुखर वाणी दी है। मार्कण्डेय इन ग्रामीण स्त्रियों के माध्यम से ग्रामीण स्त्री के जीवन का यथार्थ उद्घाटन किया है। स्त्री समाज की रीढ़ होती है और बिना रीढ़ के समाज का कोई औचित्य ही नहीं होता।इनके उपन्यासों में एक ओर जहां ग्रामीण स्त्री के दयनीय स्थिति का अंकन है तो वहीं दूसरी ओर पुरुषवादी समाज के विरुद्ध संघर्ष दिखा कर उसकी अस्मिता को जागृत करने का सफल और सार्थक प्रयास किया है ।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *मार्कण्डेय– अग्निबीज, नया साहित्य प्रकाशन, इलाहबाद, प्रकाशन– प्रथम संस्करण– 1981, पृ– 13*
2. *मार्कण्डेय– अग्निबीज, नया साहित्य प्रकाशन, इलाहबाद, प्रकाशन– प्रथम संस्करण– 1981, पृ– 17*
3. *मार्कण्डेय–अग्निबीज, नया साहित्य प्रकाशन, इलाहबाद, प्रकाशन – प्रथम संस्करण–1981, पृ– 31*
4. *मार्कण्डेय– अग्निबीज, नया साहित्य प्रकाशन , इलाहबाद , प्रकाशन – प्रथम संस्करण–1981, पृ–69*
5. *मार्कण्डेय– अग्निबीज, नया साहित्य प्रकाशन , इलाहबाद, प्रकाशन– प्रथम संस्करण –1981, पृ– 53*
6. *माहेश्वरी अरुण – नया पथ , अक्टूबर– दिसम्बर, 1986, अंक –2 , पृव – 11*
7. *मार्कण्डेय– सेमल के फूल , नया साहित्य प्रकाशन , इलाहबाद, प्रकाशन– प्रथम संस्करण–1956, पृ – 35*
8. *अग्रवाल केदारनाथ – सेमल के फूल , नया साहित्य प्रकाशन, इलाहबाद, प्रकाशन– प्रथम संस्करण – 1956 , मूल पृ – से उद्धृत।*